

१- सादा कृतार्थ रूप तुम मिथला धीप मतु गया
लसन हेतु रंग शक्ति तव, हम ई को न पगान

२- अरे तुम कोन हो जो वर के वर पाके लगे स्वयंवा है।

३- (सावनाई पोचिय दूँ छर देसना है)

४- अरे मुझसे दूँ छता ई मैं किराका पुत ई। जिसके गहाँ भगवान
मिसारी वने थे, सुन लो कान खोल कर लो, अगर भूल गये
हो तो माद कर लो जिसके यहाँ तुम हो। गाह धुइ साले मे
वैद्य थे मे उस दान गेर शिरो भाषे का पुत ई। मेरा नाम है
काणामुर

५- दशक धरे हठ हठाइ सह, अब बार-२ न बोलिये ।

आज राज से गाज गे, वल शाल चित न डोलिये ॥

गिरि राज से गुरु पामिये, सुर राज से धुन हों थले

सुख पाय लाई चढ़ाय के, धनु हाँथ धर ले जाइये

६- जोई वागवान वर दाल तीन लोक, तीन पाँव भूमि हेतु भेष वड कोह है
आर पास तार-ची-हो ताको न निशवा की-हो, देहा दान ली-हो शेष माहो

७- सौइ कीज जिय लोहि जो भाँवे

हेहय राज करी सो करेगे

८- पिन पिनाक पुरील को, विचरौ विधि ले कर वज्र को सार है

भक्ति न जानहि मे गुस्ता, जो न सुनै वे शेर गँवार है

आपन गर्व गँवार को, धनु तोड़न को सोह कहि हो विचार है

जो बहि के बल ते बल के, अब लोक को सो नाक भी बा है

९- मे धनु उठाने न आया, तँ जा अपने मन की मूर

इस भरी समा में दशक-धार, तँ ही अपना मद मदीन कर
(सावण के जाने के बाद)

१०- शब्द

यह धनु मेरे गुरु शिव का है, जानकी हमारी माल है

देवी को कर प्रणाम सह सबक अपनी पुरी को जाल है

मेरे गुरु का यह धनु हमीला मेरी मात
मात में रह जात है, अपने शीघ्र नवाय